बच्चों का बोला, लिखा और बनाया

गुलगुला

अंक 14, फरवरी 1990

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

दारू मुर्गा मांगे रे नाकेदार थानेदार

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

बल्लर भुट्टा मांगे रे नाकेदार थानेदार

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

रुपया पैसा लूटे रे नाकेदार थानेदार

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

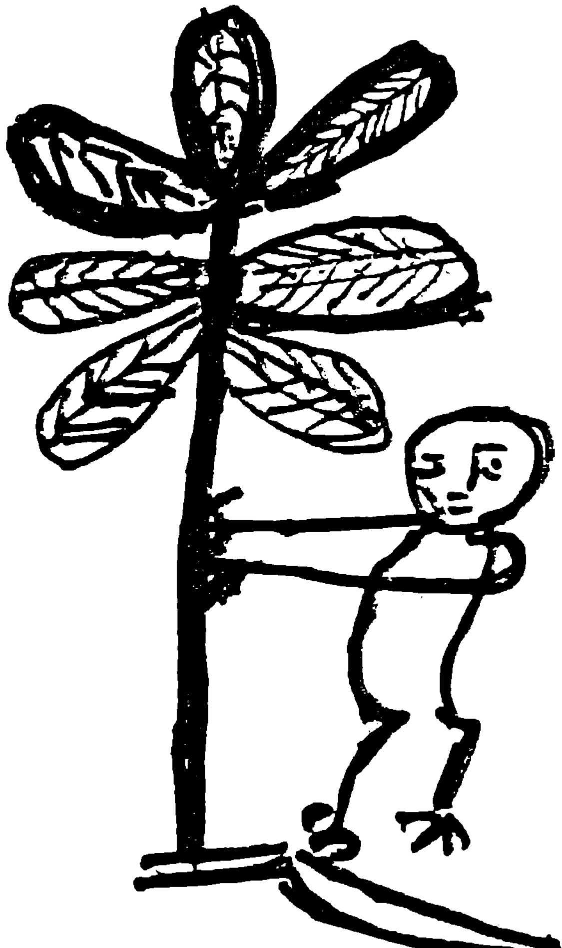
लातें घूसा मारे रे नाकेदार थानेदार

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

हुक्का पानी मांगे रे नाकेदार थानेदार

टप्पर-टप्पर घूमे रे नाकेदार थानेदार

झोपड़ी हमरी टोड़ा रे नाकेदार थानेदार



चित्र : महेश ठाकुर, ग्राम पलिया पिपरिया

• जुन्हैटा लकड़ी कांड विशेषांक



चित्र : बिसना, ग्राम पलिया पिपरिया

• बाहर छपा गीत ग्राम पलिया पिपरिया की लड़की सीमाबाई ने लिखवाया। उसने यह गीत लकड़ी कांड के बाद निकले जुलूस में सुना और गाया था।

• जुन्हैटा लकड़ी कांड : 13 दिसम्बर 1989 को वन विभाग, एस.ए.एफ. और पुलिस का एक मिला जुला जत्था बनखेड़ी ब्लॉक (ज़िला होशंगाबाद) के एक गांव जुन्हैटा पहुंचा था। उन्होंने गांव में क्या क्या किया, यह जुन्हैटा गांव के बच्चों ने *गुलगुला* के लिए लिखा है।

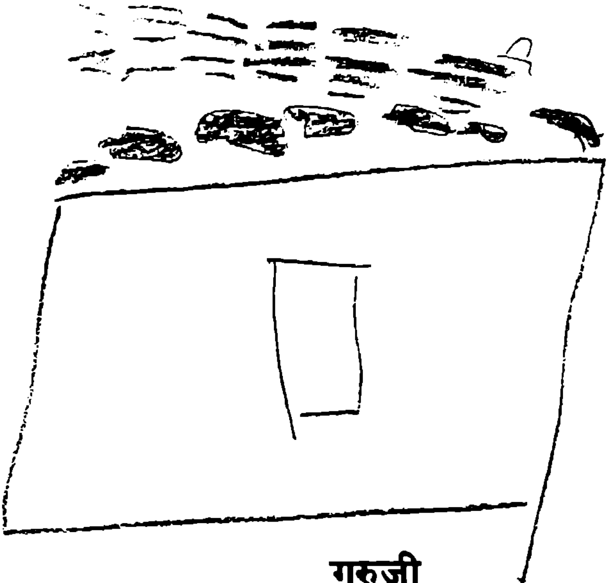
• बुन्देली शब्दों के अर्थ और कुछ लोगों का परिचय पिछले कवर के भीतर देखिए।

• बीच के पन्ने पर निरंकारदेव सेवक का गीत आत्माराम एंड सन्ज़, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित टेसू के *गीत* से है ।

बाल गतिविधि कार्यक्रम

ई-4/89 अरेरा कॉलोनी	ग्राम पलिया पिपरिया
भोपाल 462 016	डाकघर बनखेड़ी
	ज़िला होशंगाबाद 461 990

स्कूल किस लिए बनवाया

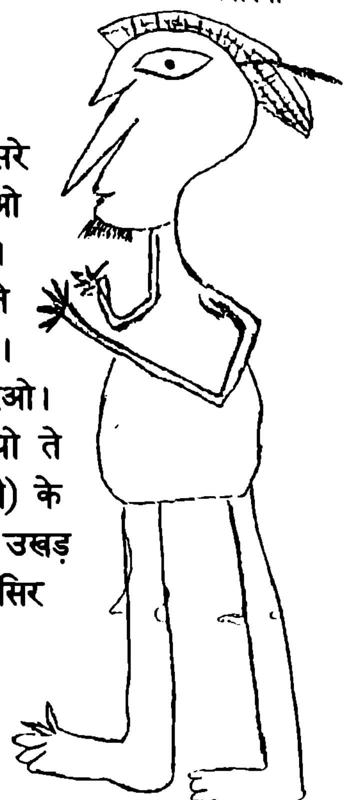


हमरे स्कूल में लड़के नहीं बैठ रहत थे और घामे में बैठ रहत थे। घाम लगता था तो सब ने मिलकर कहा कि आप ने इते स्कूल किस लिए बनवाया। लड़कों को बैठाने के लिए या देखने के लिए।

चित्र व कहानी : शहीद खां

पलिया पिपरिया

गुरुजी



किशोर भारती के सबरे झने मर गये। फिर दूसरे झने आए थे। बिनने मोड़ा हे स्कूल में भर्ती कराओ थो। बिनके मोड़ा हे गुरु जी ने खूब मारो थो। बाकी पीठ सूज गई थी। किशोर भारती वालों ने गुरु जी हे जेल में बन्द कराने की धमकी दी। गुरु जी ने फिर कछु दिनों तक मारवो बन्द कर दओ। फिर मारवो शुरू कर दिया। सलीम हे मारो थो ते बाकी लाल पीठ पड़ गई थी। फिर अन्जू (उमेदी) के सिर के बाल पकड़ बाहे उठा दई तो बाके बाल उखड़ के गुरु जी के हाथ में आ गये थे। अभी उसके सिर में निशान बने हैं।

श्वेता

पलिया पिपरिया

चित्र : उमेदी, ग्राम पलिया पिपरिया

हरसूद यात्रा

हम हरसूद गये थे। तो हम यहां से बनखेड़ी गये। बनखेड़ी में पूरे आदमियों हे गिने ते फिर इतने में गाड़ी आ गई। जा बैलगाड़ी नहीं, रेलगाड़ी थी। फिर गाड़ी में बैठ गये, फिर बनखेड़ी से छूटी गाड़ी तो पिपरिया में ठाड़ी हुई। फिर सोहागपुर में भी खड़ी भई, फिर बागड़ा फिर इटारसी में खड़ी भई थी। फिर खिड़किया और हरदा से हरसूद।

फिर हरसूद के आदमियों ने हमें एक मकान में ले गये, और वहां से मंडी हाऊस। भई जो कार्यक्रम हो रओ थो। फिर सबेरा होते ही झाबुआ के लोगों का जुलूस आ रओ थो। हम एक नदिया हे गये ते फिर मुंह-हाथ धोकर हम आ गये। फिर हमने भी जुलूस निकालो। हमने नारे लगाये - "बांध नहीं बनेगा - कोई नहीं हटेगा"। "बना बना के बांध जा धरती ऊजड़ कर दई रे-रे-रे-रे-रे"। "गली गली में शोर है, राजीव गांधी चोर है"। फिर एक नाटक किया होशंगाबाद के कलाकारों ने। फिर जुलूस खत्म हो गया। पूरे इलाके के कोने-कोने के आदमियों के संग एक बड़ी सभा भई।

हम तों आ गए फिर पैसिंजर से। हमने इटारसी में आलू गोंडा लये। मैने बुधिया और सुमन तीनों ने खाये और घर आ गये।

संतोष

पलिया पिपरिया

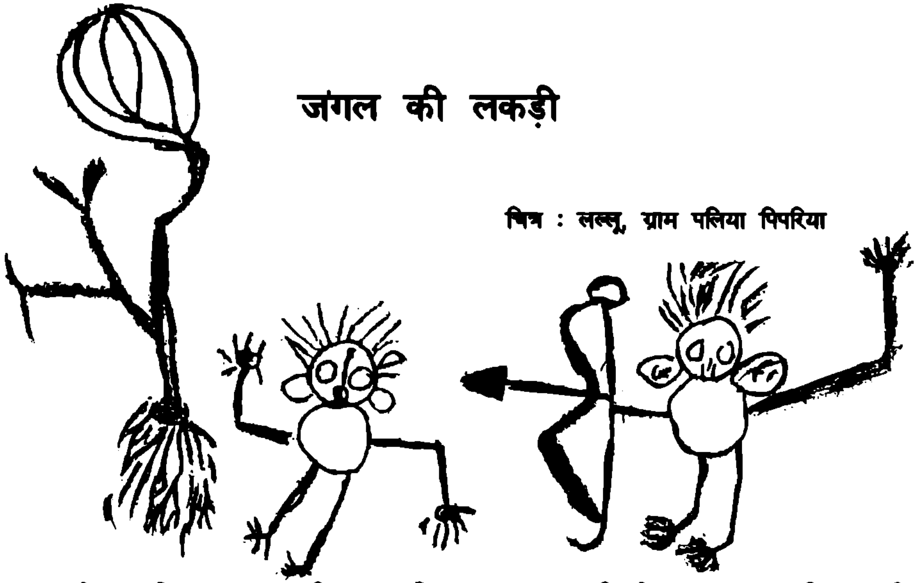
बकरी मर गई

एक दिन हमरी बकरी मर गई थी। कुएं के आजू बाजू बेसरम थी। मैंने बेसरम के नीचे गढ़ा खोदा और बकरी गढ़े में डाल दी।

इशाक मुहम्मद

पलिया पिपरिया

जगल की लकड़ी



चित्र : लल्लू, ग्राम पलिया पिपरिया

जुन्हैटा स्टेशन खरसली गांव से कछु दूर नहीं है। साइकल से जल्दी पहुंच जात हैं, रिंगत में देर लगे। उते लोग बैठे रहत है। फिर लकड़बग्घा आत हैं। लकड़ी ले आत हैं, झोलना धरे रहत हैं। बामे उन्नहा और रोटी रखे रहत हैं। स्टेशन पे धड़ाव के और पड़ाव के आदमी आत है। पहाड़ के आदमी लकड़ी-फाटों को काम करत है। जे जंगल से (निस्तार की) लकड़ी काटके लात हैं और बाबेर भी लात हैं। एक गठ्ठा लकड़ी आज काटत हैं और कल लात है। लकड़ी गाडरवारा, सालीचौका में बेचत हैं।

जंगल में ज्यादा पेड़ हैं, खूब घनो हैं। ठूंठ काट के लात हैं। कोई बा में घुस जात है तो खूब चिल्लात है। यहां चिल्लाओ तो उते सुनात है। एक बार धड़ाव में शादी हे गये थे तो एक आदमी चिल्ला रओ थो, ते वो दूर सुनात थी।

जंगल में जब आग लगत है तो पेड़ मुरझा जात हैं। जानवर और पखेरू जहां आगी लगी है उते से चले जात हैं। चिरैया ऊपर उड़त रहत है। लड़ैय्या और बन्दरा खेतों में आ जात है।

राजू

खरसली

मिही लाल और चौकीदार

जुन्हैटा रेल्वे फाटक से मिही लाल की बैलगाड़ी पार रही थी। दोनों तरफ से रेल गाड़ी आ रही थी। और फाटक बन्द थो। मिही लाल चौकीदार से कहन लगो का फाटक खोल। चौकीदार ने कही का मैं नहीं खोलूं, दोनों तरफ से गाड़ी आ रई है। मिही लाल इत्ते में सेवल उठा के चौकीदार हे मारबे दौड़ो। मूड़ के ऊपर से बार छीयत निकर गओ।नई तो बाकी घींच उतर जाती। फिर मिही लाल ने सेवल रखे चौकीदार हे रखेदत एक फल्लांग तक पीछे दौड़त गओ मारबे हे। फिर मिही लाल घर भग गओ।

चौकीदार वापस चौकी आ गओ। फिर बाने फोन से बनखेड़ी बात करी। चौकीदार ने ऊपर रिपोट कर दयी। मिही लाल पे केस चलो। बाद में चौकीदार जीत गओ। फिर चौकीदार नारियल फोड़ो और परसाद बांटो सबहे।

मनोज

जुन्हैटा

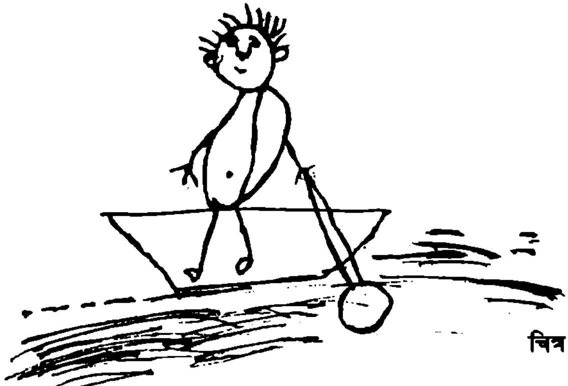
ढोर चरत हैं हम गिल्ली डन्डा खेलत हैं

६ बजे सुबेरे जल्दी उठकर ढोर ढीलवे चलो जात हों। मेरे जोरे पूरे १९ ढोर हैं। पहले जाकर झाड़ा बुहारी करत हों। इसके बाद ९ बजे ढोर ढीलते हैं। ढोर चरत हैं उस समय गिल्ली डन्डा खेलत हैं। दोपहर को १२-१ बजे तक ढोरों हे पानी पियावे नदी ले जात हैं। फिर आधे ढोर घरे ले जात हों और बांध के चरवे डार के फिर आधे ढोरों हे चरावे हे ले जात हों। शाम के ५ बजे ढोरों हे घर ले आत हों। बाके बाद कटियां काटत हों। बामे भुसा मिलाके चरवे डारत हों। ८ बजे घरे आत हों, फिर खाना खाके जय सिया राम।

प्रकाश

पलिया पिपरिया

अब मैं मच्छी को धंधो करत हों



चित्र : जलज, पिपरिया

हम पांच भाई हैं और तीन बहिन हैं। भाईयों में सबसे छोटा मैं हूं। और बहिनों में सबसे छोटी प्रभा है। पहले हमरो डुकरा मच्छी लेवे हर दिन नदिया जात थो। हमरो घर मछलियों से पलो है। और थोड़ी सी खेती किसानी भी थी। और हम मच्छी बेचत थे गांव में।

अब हमरो डुकरा मच्छी लेवे नदिया नहीं जाए। अब मैं मच्छी को धंधो करत हों, मनो मोहे गांव हे जावे में शर्म लगत है। आदमी मोसे कहते हैं, तीन रुपइया पाव दे दो। बजार में ६ रुपइया पाव बिकत है। ऐसे कह देत है मनो फिरी (फ्री) की लानी है। जैसे इनको बाप हमे देके गओ है। मोहे बेजा गुस्सा आत है। कुई कहत है की पिसी के दे दो, और कुई कहत है उधार दे दो। मैं मच्छी उधार नहीं देऊं। फिर आदमी पैसा नहीं दें, खा जात हैं। अगर मच्छी नहीं बिकी तो घर में ले जा के बनाके खा ले हों। और फिर ताजी मच्छी मार के और बासी मच्छी मिलाके भुनसारे बेच आत हों। फिर बिक जात है।

मनमोद

पलिया पिपरिया



चित्र : धनीराम, ग्राम खरसली

जुन्हैटा लकड़ी कांड

बन्दूक वाले आये



चित्र : बलवंत सिंह, ग्राम पनागर

१३ तारीख को (१३ दिसम्बर १९८९) को बन्दूक वाले आये। तो बिनने हमारे घर की लकड़ी निकाली और सब लकड़ी ट्राली में भर ली। तो हम ने पलिया पिपरिया खबर धराई। तब पहले दो आदमी आये। उनके नाम हैं हरगोविंद और शेख आजाद। इन दोनों को एक फारेस्ट वाले ने कहा कि दोनों को पकड़ कर मैटाडोर में पटक दो। तो पटक दिया। तब हमने भी पांच-पांच डिगला मारे। बिन्ने हमरी बाईचारों को मारा-पीटा और इज्जत-बेइज्जत की। तो हम खरसली रेल्वे गेट के पास पहुंचे। बाबाजी ने फाटक खोल दिया तो वे भाग गये।

छबरसिंह

जुन्हैटा

अब जुलूस फैलेगा

एक दिना हमरे इते बहुत बड़ा जुलूस निकला था। तो आजाद और हरी का सुआगत किया गया था। पलिया पिपरिया, जुन्हैटा, पिपरिया और सोहागपुर में भी जुलूस निकाला गया था और हरी और आजाद ने कहा कि अब जुलूस फैलेगा।

विजय [illegible]

पलिया पिपरिया

पुलिस वाले डिराके भाग गये

बाईचारें आ-आ के खिरका में गाड़ी के सामने सो गई थी। सिपाहियों ने बन्दूकों में छर्रा भर-भर के भमान लगे थे। पहले हरगोविन्द को पास बुलाया और पकड़कर मारने लगे। बन्दूक लाठी भी मारी थी। हमने कही कि हरगोविन्द हे यहीं पर छोड़ जाओ मनो उनने हमरी बात नहीं मानी और हमरे नेता हरगोविन्द को थाने ले जाने लगे।

पहले हम सब लोग दूर खड़े थे। पुलिस वाले हमको लाठी से मारने लगे तो हम भी उनको मारने लगे। हमने धूरा मारी और पुलिस वालों ने ढंगसा (बागुड़ की काटे वाली लकड़ी) तोड़ी थी तो हमने छुड़ा-छुड़ा के बेई ढंगसा मारना शुरू कर दिया। हमने सोचा कि पुलिस वालों की ठीक से पिटाई नई भई और हमने पत्थरा मारबो शुरू कर दओ। कछु पुलिस वाले डिराके भाग गये और कछु आगे जाके खड़े हो गये।

वे लोग हरगोविन्द और शेख आजाद को खरसली के रास्ते से ले जा रहे थे। हम सभी लोग गाड़ी के पीछे भागे। खरसली का रेल्वे गेट बन्द था। हम लोगों ने पथराव किया। मनो पुलिस वालों ने बन्दूकें निकाल लईं और कहन लगे, "हम तुम्हें फोड़ देंगे।" इतने में पुलिस वालों को बचाने के लिए रेल्वे गेट खरसली के बाबा साहब ने खुलवाया और गाड़ियां निकलने लगी। सारी गाड़ियां निकल गईं। फिर बाबा साहब से हमने पूछा, "ये गेट आपने क्यों खुलवाया।" तो बाबा जी ने कहा, "आप लोग जाओ। जिन लोगों को चोट लगी है उन्हें बनखेडी ले जाकर इलाज कराओ।"

फिर हम लोग घर आ गये और सब लोगों को इकट्ठा कर बनखेड़ी जाने के लिये तैयारी की और हम सब बाईचारों को लेकर बनखेड़ी चल दिये। करीब ४०-५० आदमी गये। नारे लगात रेन्ज आफिस गये और पिपरिया से भी १०-१५ लोग आ गये थे। सभी ने नारे लगाये। रेन्जर से बात की और कहा कि हमें लिखित देओ का हमने

हरगोविन्द और आजाद हे गिरफ्तार करे हैं। तो रेन्जर ने लिखित दिया कि हमारे यहां से कोई जुन्हैटा नहीं गया है। उसके बाद थाने गये। वहां पर हमारे और भी लोग थानेवालों से बात कर रहे थे। इसके बाद जिन लोगों को चोटें आई थीं उनका मेडिकल कराया और करीब २.00 बजे रात को पैसिंजर से घर वापिस आए।

मुन्नी बाई

जुन्हैटा

गांव का एका

हमरे गांव में पुलस बारे आये थे। हमरे गांव के घरों में घुस के लकड़ी निकारी और लोगों के घर घिसल गये। लकड़ी बाहर निकाल लई और ट्राली में लकड़ी संग बारों ने भरी। दुर्गा चौक में जीप मोटर भी खड़ी थी। पलिया पिपरिया के ४-५ आदमी आये। बिनने घरों से आदमी-बाईचारें, मोड़ा-मोड़ी इकट्ठे करे। मोटर के आगे खड़े हो गये।

तई बाईचारों ने हरि से कही का हमरी लकड़ी हमें मिल जाए। तई हरि नें पुलिस बारों से कही का गांव के गरीब लोगों की लकड़ी दे दो। तई बिनने कही का नई देंय। फिर सबके सब मोटर जीप के आगे बैठ गये। फिर नारे लगाये का "गांव का एका जिन्दाबाद" और "ये जंगल हमारा आपका है, नहीं किसी के बाप का है"।

फिर पुलस बारों ने लठिये मारन लगे। फिर बाइयों और आदमियों ने पथरा चलाये और जीप को कांच फूटन लगो। फिर भीड़ इते उते हो गयी। जीप भगा दयी जोर से। ट्रेक्टर मोटर रह गयी। ट्रेक्टर के ड्राइवल हे मारो ते बो नीचे उतर गओ। फिर पुलस बारों ने बाहे बिठारो तई वे सब भग गये। पीछे पीछे सबई चौकी तक भगत भगत गये। फाटक बन्द थो। तई वे लौटन लगे। बाबा साहब ने फाटक खुलवा दओ तई वे भग गये और हम लौट आये।

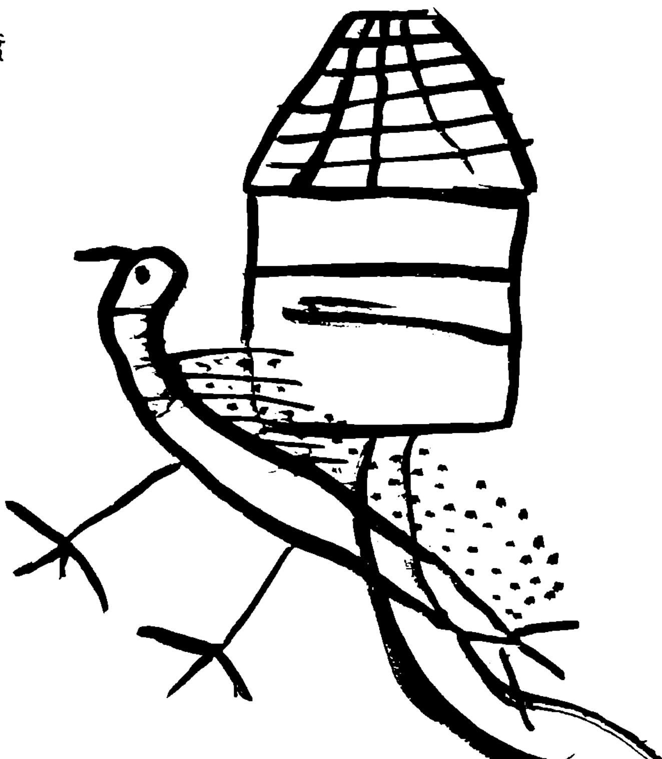
फिर रात में गांव के मुतके लोग जुड़े और बनखेड़ी गये। बनखेड़ी हरि भैया हे छुड़ाबे हे गये। बनखेड़ी में नहीं मिले तब भुनसारे रात के लौट के आये।

ऐतवार (इतवार) हे हरि हमरे गांव में पलिया पिपरिया के लोगों के साथ जुलूस में आये। फिर हरि और आजाद हे माला पहरायीं। खूब नारे लगाये "हरगोबिन्द जिन्दाबाद, शेख आजाद जिन्दाबाद"। पूरे गांव में मुतके आदमियों को जुलूस घूमो। फिर दुर्गा चौक पे बैठे।

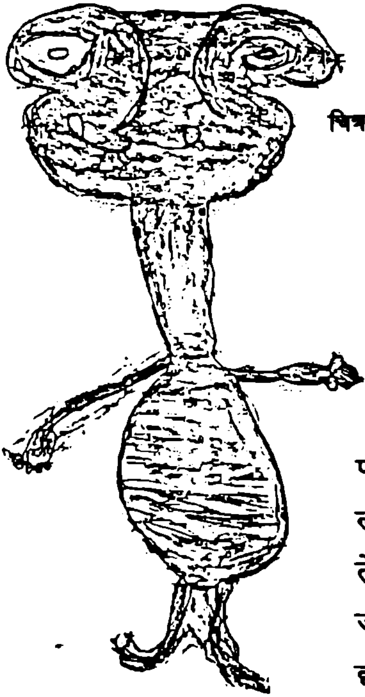
फिर चश्मा और दाढ़ी बारे भैया ने भाषण दये। सब आदमी सुन रये थे। फिर हरि भैया ने सबे बताई का हमरे संग का भओ, बो सब बताओ।

गुलाब बाई

जुन्हैटा



चित्र : जयप्रकाश, ग्राम खरसली



चित्र : सुरेश, ग्राम खरसली

पान की डलिया

पान की डलिया क्यों लटकी?
लटकी है तो लटकी है
तेरा इसमें जाता क्या
जाता तेरा छाता क्या
छाता तेरा उड़ गया
उड़कर रस्ता मुड़ गया
मुड़ गया तो मुड़ गया
तेरा कौनसा गुड़ गया
चला गया तो गया चला
तू भी अपने घर को जा

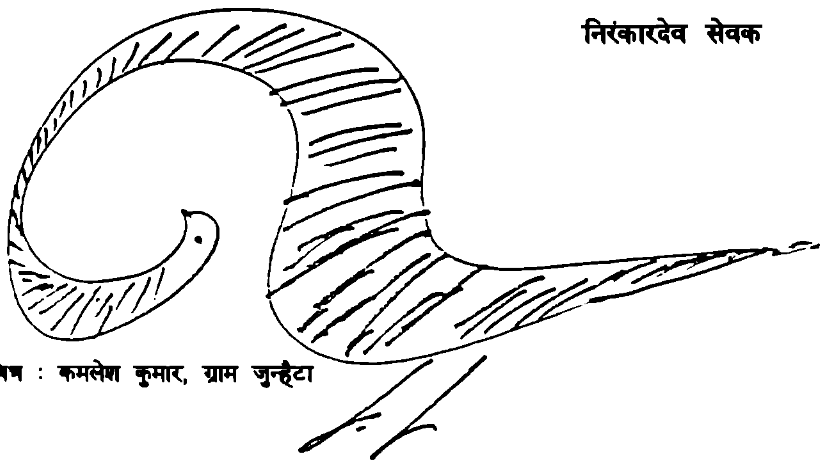
तेजी ग्रोवर



क्या सज-धजकर चली बरात

क्या सज-धजकर चली बरात, जिसमें सिर्फ आदमी सात।
आगे मकना हाथी तीस, उनके पीछे भालू बीस।
कोतल घोड़े साठ हज़ार, जिन पर कोई नहीं सवार।
बन्दर पूरे पैंतालीस, दांत निपोरे काढ़े खीस।
कुत्ते-बिल्ली सैंतालीस, चूहे और छछूंदर बीस।
मेंढ़क तीस बजाते ढोल, भरी ढोल में जिनके पोल।
झींगुर साठ बजाते झांझ, जिनकी मात सदा की बांझ।
सत्तर नाग बजाते बीन, जिनके सुर की तान महीन।
नब्बे मच्छर लिए मृदंग, परमेश्वर से बढ़कर नंग।
आगे-पीछे चली बरात, जिसमें सिर्फ आदमी सात।

निरंकारदेव सेवक



चित्र : कमलेश कुमार, ग्राम जुन्हैटा

पुलस बारे आये

हमरे गांव में नाकेदार और पुलस बारे आये। शुरू में गोकल रज्झर के घरे घुसे और घर से लकड़ी निकारी थी। बाके मोड़ा मोड़ी हे माता निकरी थी। वे जूता पहरे घर में घुसे थे। मोड़ा मोड़ी ने कही का घरे कुई नई हां, तुम जूता पहरे नई घुसो। अन्नू भैय्या जी के घरे दूंक के देख रये थे और थानेदार कहे का जामें मुतकी लकड़ी है। मनो बिनने बिनकी लकड़ी नई पकड़ी। फिर पिल्लू दादा की टपरिया घिसला दई और पूरे गांव में जबरन घुसे। मुतके आदमियों की लकड़ी निकारी और ट्राली भर लई। फिर पलिया पिपरिया के ४-५ आदमी आये। बिनने गांव के लोग-लुगाइयों और मोड़ी मोड़ों हे इकट्ठे करे। फिर गैल रोक के खड़े हो गये। फिर हरि भय्या ने पुलस बारों से और रेंजबारों से कही का गरीब आदमों की लकड़िया मत ले जाओ और मुन्ना ठाकुर की ले जाओ। फिर पुलस बारे ने हरि से कही का इते आओ साहब बुला रहे हैं। फिर बाहे मारन लगे और जबरन जीप में डार लओ। इत्ते में पूरे आदमी खड़े हो गये ओर कहन लगे का हरगोविन्द हे छोड़ दो। बिनने कही का नई छोड़े।

पुलस बारे लठियें मारन लगे तई आदमियों ने धूरा-डिगला पत्थरा मारबो शुरू कर दओ। पुलस बारों ने खूब मारे तई आदमियों ने जीप को कांच फोड़ दओ। पुलस बारे जीप निकाल के ले गये। बई में हरि थो। फिर ट्रेक्टर के डिराइबल हे गांव के आदमियों ने खूबई मारो। तई बो कहन लगो, "भय्या जी मोहे मत मारो," फिर नीचे उतर गओ। फिर पुलस बारे दौड़े। तई डिराइबल हे ट्रेक्टर में बिठार लओ ओर वो ट्रेक्टर चला के ले गओ। आदमी पीछे दौड़े चौकी तक और पत्थरा मारन लगे। फाटक बन्द थो ते बाबाजी ने खुलवा दओ। फिर बाबा जी ने हरि हे पानी पियाओ और बातचीत करी। फिर वे निकल गये।

मनोज कुमार

जुन्हैटा

दोषी कौन

हमरे गांव जुन्हैटा में १३ तारीख में १० आदमी एक से उन्न्हा पहने आए थे। वे सबसे पहले लकड़ी देखने आये। उनके साथ हमरे गांव का मुन्ना ठाकुर भी था, जो गांव का जमींदार है।

मुन्ना ठाकुर ने कहा, "जाके घर में की लकड़ी निकाल लो, बाके घर में की लकड़ी निकाल लो।" हमरे यहां की लकड़िया निकालीं, हमें बहुत बुरा लगा। और मोहे बहुत गुस्सा आई मनों का करूं मैं बहुत छोटो थो।

फिर हमरे यहां पलिया पिपरिया के बहुत से लोग आये थे और हमारे यहां से भी बाईचारें और मुतकेरे आदमी थे। सभी लोग चिल्ला रहे थे - "हमारी एकता ज़िन्दाबाद, जो हमसे टकरायेगा मिट्टी में मिल जायेगा।" महुआ के पेड़ के इते से सबरे आदमियों ने गांव का एक चक्कर लगाया और दुर्गाजी के चौक में सबरे आदमी बैठ गये। सभा होने लगी। पहले गांव के एक लंगड़ा टेलर ने १३ तारीख की घटना के विषय में समझाया और बाद में सभी लोगों ने तालियां बजाईं।

फिर एक दाढ़ी वारो आओ वो बहुत देर तक सबसे कछु-कछु कहत रओ। फिर कहन लगो का जुन्हैटा के आदमियों ने हमरो सबरो जंगल काट डारो। फिर पलिया पिपरिया के आदमियों ने बाहे बहुत समझाओ कि जंगल असल में कौन काटत बेचत है और दोष कौन हे देत है। बा दिना मोहे अच्छो लग रओ थो। फिर मोहे भूख लग आई ते मैं घरे आ गओ।



इन्दरसिंह पटैल

जुन्हैटा

चित्र : सनकी, ग्राम पलिया पिपरिया



चुपचाप बैठ जाओ

१३/१२/८९ को पुलिस और फारेस्ट वालों ने आकर जुन्हैटा गांव में गरीब लोगों की झोपड़ियां तोड़ी और गाली दी मां बहन की। तो हमने कहा बन्दूक वाले से हमरी झोपड़ियां मत तोड़ो। तो कहने लगे कि आपकी इज्जत चाहिए तो चुपचाप बैठ जाओ। तो हमने कहा कि हमने क्या किया है तुम हमको चुपचाप बैठा रहो हो। तो कहने लगे कि हम बन्दूक से फोड़ दयेंगे। तो हमारे संगठन के हरगोविन्द ओर शेख आजाद आ गये थे। पुलिस वाले पूरी लकड़ी भर कर ले जाने लगे थे तो हरगोविन्द ने कहा गरीब लोगों की लकड़ी दे जावे। हरगोविन्द को धोके से बुलाकर मारा पीटा और साथी शेख आजाद की बहुत पिटाई की। हम सब लोग दौड़े बचाने के लिए तो हमे भी अधिक मारे। तब भी हमने उनका पीछा नहीं छोड़ा।

राज कुमार बंसकार

जुन्हैटा

चित्र : रामस्वरूप, ग्राम पलिया पिपरिया



पुलिस वाले

हमरे घरे दो आदमी आये थे। वे दोई पुलिस वाले लकड़ी देखवे आये मनो उन दोई पुलिस वारो हे चाय पिलाई और तम्बाकू खिलाई। फिर हमरे घर से चले गये।

गीता बाई

जुन्हैटा

रंगदारी बतात है

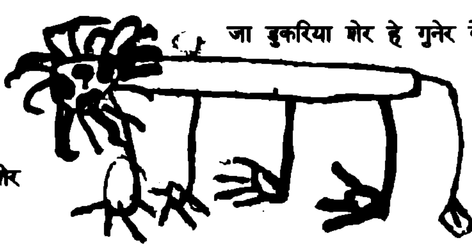
जब पुलिस वाले आये थे तब हम ढोर चरा रहे थे। पुलिस वालों की गाड़ी हे देखकर हम सुई भगत-भगत गांव हे चले गये और उनके पीछे घूमत रहे। फिर बिनने आदमियों के घर घिसला दये और उनकी लकड़ियां निकाल लईं और उन्हें गारी देन लगे। पुलिस वारे, जूता पहने घर में घुस जात है। ऐसो करबे से गांव के आदमियों हे बहुत गुस्सा आत है। पुलिसवारों से कछु कहें तो गांव के आदमियों हे ढोरों घाईं मारत हैं। बड़े आदमियों (जमींदार) के इते नई घुसे। बड़े आदमी हमें रंगदारी बतात हैं और बेई सबसे ज़्यादा लकड़ी लान के बेचत हैं।

हमने घर के काम काजे लकड़ी लानी तो पुलिस वालों हे बुला लेत हैं। और पुलिसवारे हमसे पैसा मांगत हैं और पैसा नहीं देय तो थाने में ले जान के बंद कर देत हैं। और रात में पिटाई करत हैं। और कहत हैं "और लकड़ी लानी तो उलटो लटका दे हैं।" और पलिया पिपरिया के हरी भैया के बारे कहत हैं, "बा नेता हे सुई देख ले हैं। ज़्यादा नेता बन रओ है।"

विनोद कुमार रझर
जुन्हैटा







चित्र : कनछेदी, ग्राम जुन्हैटा

मेले की चहल पहल

हम लोग बरमान मेले में गये थे। तो वहां बहुत चहल पहल थी। नर्मदा किनारे साधु सन्त भजन एवं हर हर नर्मदे कर रहे थे। और वहां एक चालू लड़का आया और साधुजी की पोटरी लेकर भाग गया। और साधुजी की आंखों में धूल भी डाल दी।

इसी बीच वहां कुत्ता पुलिस भी आई थी। साधुजी को रोते देखकर पुलिस वाले ने पूछा कि साधुजी आप क्यों रो रहे हैं। साधुजी ने बताया कि एक गुन्डा आया। उसने मेरी आंखों में धूल डाल दी और पोटरी लेकर भाग गया।

उस गुन्डे को पुलिस वालों ने देख लिया और पकड़ लिया। लड़का कहने लगा, "पुलिस जी मुझे छोड़ दो।" पुलिस वाले ने कहा कि नहीं छोड़ते। वह लड़का पुलिस वाले के सिर पर पोटरी फेंक कर बरमान मेले में भाग गया। वहां बहुत चहल पहल थी।

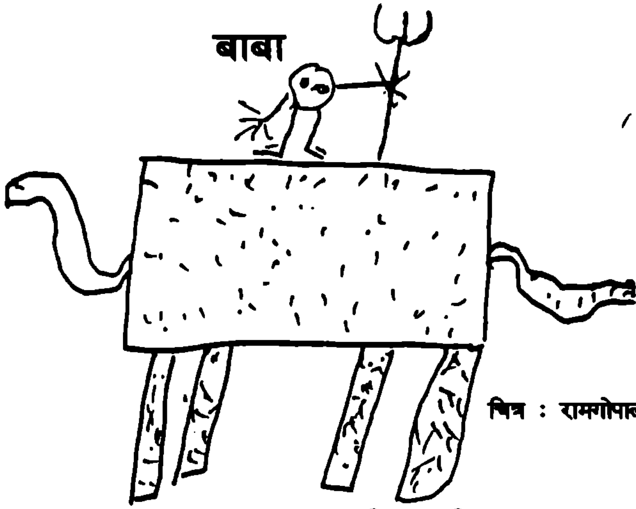


हम बरमान से वापिस आये। स्टेशन पर मालगाड़ी आ रही थी। तो गमार व्यक्ति चिल्लाये कि गाड़ी आ गई। स्टेशन पर रात में बहुत ठन्डी थी। तो बहुत से लड़के बच्चे रो रहे थे।

चित्र और कहानी : रामप्रसाद,

ग्राम जुन्हैटा

बाबा



चित्र : रामगोपाल, पिपरिया

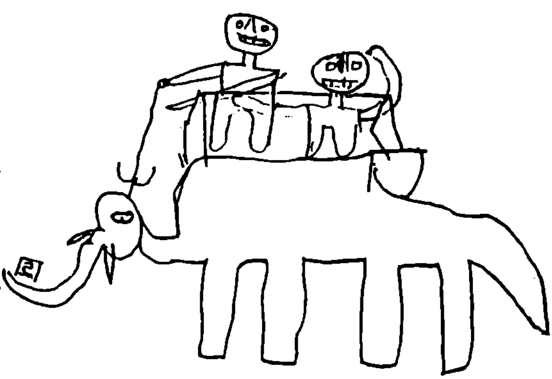
एक दिन हम सब जटा शंकर गए थे। उते एक बाबा रहत थो। भाँ को पानी बेजा गहरो रहत थो। जे कुई घुस के सपरत थो ते भई डूब के मर जात थो। बाबा साबुन लगा के नई सपरन देत थो। बाबा को एक मोड़ा थो और एक शेर सुई थो। मनो शेर मोड़ा हे खात नईं थो। बाबा शेर हे एक रोटी को कौर बता के बुला लेत थो।

अकबर खाँ

पलिया पिपरिया

हाथी और सुआ

एक हाथी थो और एक सुआ थो। एक खच्चा में हाथी गिर गओ थो। सुआ ने कही, "तू जा में काहे घुस गओ?" बाने कही, "मैं गिर गओ बा में।" सुआ ने कही, "कैसे गिर गओ।" तोता फुर से उड़ गओ।



रामस्वरूप

पलिया पिपरिया

चित्र : नर्मदा प्रसाद साहू, पिपरिया

फिर भुनसारे बोई काम



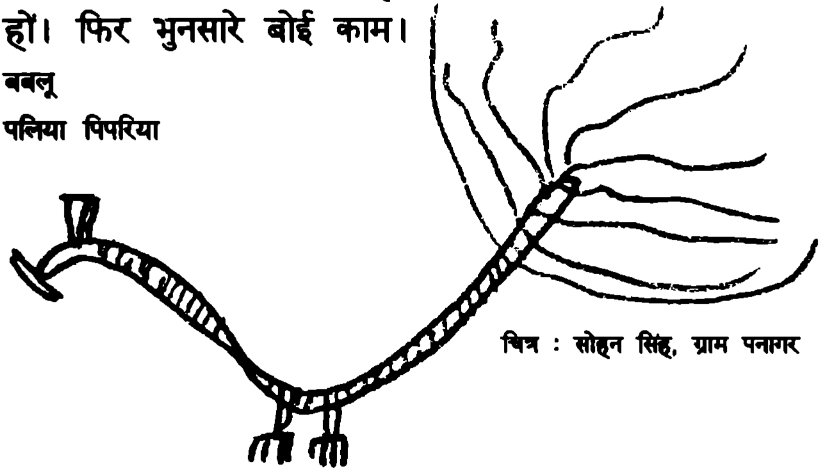
चित्र : विशाल, ग्राम पलिया पिपरिया

मैं (बबलू) मोटा पटैल (कृष्ण कुमार पलिया) के ढोर चरात हों। ५ सेई (४0 किलोग्राम) पिसी एक महीना की चरवाही देत है। ८ बजे काम पर जात हो। एक दहलान और एक आंगन झारत हों, दो बिस्तर उठात हों, एक बाल्टी पानी भरत हों। फिर दो कप चाय पीवे देत है बावी (वह भी) गुड़ की। इसके बाद एक गुटऊआ फूल बीलपत्री लात हों। इसके बाद घर कलेऊ करवे जात हों। फिर ढोर ढीलवे जात हों। मैदान में खड़े कर के गिल्ली डन्डा खेलते हों।

दोपहर को नदी ढोरों हे पानी पिआवे ले जात हों। फिर बैलों हे दोपहर को घर ले जात हों। फिर लौटकर ढोर चरात हैं। दोपहर के बाद बटेर पकड़त हैं और भूंज के खात हैं। ५ बजे शाम को ढोरों हे घरे ले जाकर बांधत हैं। ढोर बांधवे के बाद क्रिकेट खेलत हों। फिर टी.वी. देखत हों। इसके बाद दो बिछौना करत हों। और भी काम करत हों कही टहूका। बाके बाद में ८ बजे घर आत हों, खाना खाने के बाद पत्ता खेलत हों, १२ बजे तक। बाके बाद सो जात हों। फिर भुनसारे बोई काम।

बबलू

पलिया पिपरिया



चित्र : सोहन सिंह, ग्राम पनागर

बुंदेली शब्दों के अर्थ

कही टहूका - कहना मानकर किया गया छोटा मोटा काम	धूरा - धूल
को - का	नईं, नईंहा - नहीं, नहीं है
कलेऊ - कलेवा, नाश्ता	पिसी - गेहूं
कायरे - काहे रे	बाबेर - एक घास जिससे रस्सी बनती है
कटिया काटना - पशुओं के लिए भूसे में हरी घास काट कर मिलाना	बाकी - उसकी
खिरका - गांव के बाहर पशु रोकने की जगह	बेजा - बहुत
गेड़ी - घर की दीवार/छत में लगी लकड़ी	बाईचारें - औरतें
घांई - तरह	बिन ने - उन्होंने
घाम - धूप	बा ने - उसने
घिसलना - गिरना	बई, बेई - वही
घींच - गर्दन	भमान - घुमाने
जा, जे - यह	भई - वहीं
झोलना - थैला, झोला	भुनसारे - सवेरे
टप्पर-टप्पर - झोंपड़ी झोंपड़ी	मनो - लेकिन, मानो
ठठरी बंधे हे - अर्थी निकले (तेरी)। यह गाली आमतौर पर औरतें देती हैं	मोड़ा-मोड़ी - लड़का-लड़की
डुकरा, डुकरिया - दादा-दादी, माता-पिता, बूढ़ा-बूढ़ी	मोंग गओ - चुप हो गया
ढंगसा - बागोड़ की कांटे वाली लकड़ियां	रखेदना - खदेड़ना, पीछा करना
ढूंक के - झांक के	रंगदारी - दादागिरी
ते,तईं - तो, इसलिए	रिंगत में - चलते में
धड़ाव पड़ाव - एक पहाड़ी गांव का नाम	लकड़बग्घा - लकड़हारा
	लेटी - बेर की कांटे वाली लकड़ी
	सपरना - नहाना
	सुई - भी
	हे - को

<u>इस अंक में आए कुछ लोग :</u>

हरगोविन्द और शेख आजाद : किसान मजदूर संगठन के कार्यकर्ता, पलिया पिपरिया गांव के निवासी

मुन्ना ठाकुर : जुन्हैटा गांव का राजपूत जमींदार

बाबा साहब : जुन्हैटा के पास खरसली गांव का निवासी, मुन्ना ठाकुर का रिश्तेदार

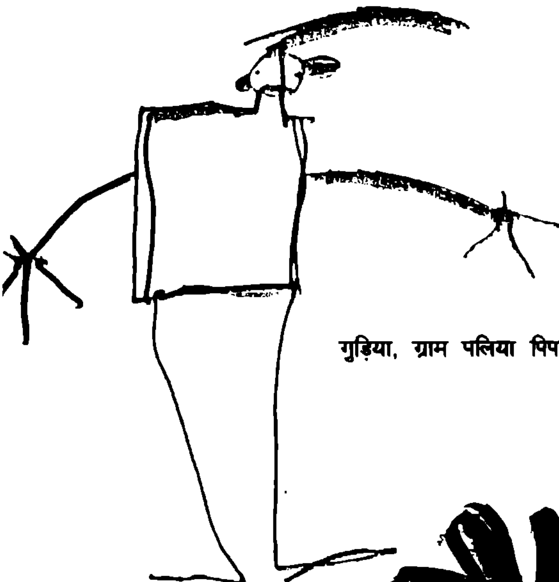
एक डुकरिया आ रई थी

खेल खिलौना ला रई थी

बेर करोंदा खा रई थी

मच्छी की चाल जा रई थी

जगदीश, ग्राम खरसली



गुड़िया, ग्राम पलिया पिपरिया

फिर एक चिरैया

कुटर-कुटर करत करत

चें चें चें करन लगी,

और बई को चिरबा

चीं-चीं बोलत-बोलत

रेंचुक-रेंचुक करन लगो

जगदीश, ग्राम खरसली



चूं चूं चिरैया

गैल में मढ़ैया

दूर मती जइये

खा जाय लड़इया

हसीब और रामस्वरूप, ग्राम पलिया पिपरिया

सरोज, ग्राम खरसली

एकलव्य, भोपाल के माध्यम से संचालित बाल गतिविधि कार्यक्रम, ई-4/89 अरेरा कालोनी, भोपाल द्वारा